



Abu Jahl Ki Maut (Gujarati)

# અબુ જહલ કી મૌત

- દો કમસિન મુજાહિદીન 2
- જો રોતા હૈ ઉસ કા કામ હોતા હૈ 17
- લટકતા ગાઝૂ 6
- સફર કે 32 મ-દની ફૂલ 21
- જિબ્રાઇલ عَلَيْهِ السَّلَام કા ઘોડા 16

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તત, જાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાસ્ત અલ્લામા મોવાલા અબૂ ડિવાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-મવી کتابت بیروت  
المساجید

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
દીની કિતાબ યા ઇસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુઈ પઢેગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હે :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમ પર ઇલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઓર બુરુગી વાલે । المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت  
નોટ : અલ્વલ આબિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના  
વ બકીઅ  
વ મગ્કિરત  
13 શબ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



### અબૂ જહ્લ કી મૌત

યેહ રિસાલા (અબૂ જહ્લ કી મૌત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ને ઉદ્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હે.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઇસ્લામી) ને ઇસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ ક્રિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઇસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ, ઇ-મેઇલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઇસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેકટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,

તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઇન્ડિયા

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## अबू जह्ल की मौत<sup>1</sup>

शैतान लाभ सुन्ती दिलाये येह बयान (27 सफ़हात) मुकम्मल पढ  
लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी छिन्किलाब बरपा  
डोता महसूस इरमाअेंगे.

### दुइए शरीफ़ लिखने वाले की मग़ि़रत हो गइ

उतरते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :  
मेरा अेक छस्लामी भाई था, मरने के बा'द उसे प्वाब में देख कर पूछा :  
‘مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟’ या'नी अद्लाह तआला ने आप के साथ क्या मुआ-मला  
इरमाया ? जवाब दिया : अद्लाह तआला ने मुझे बप्श दिया. मैं ने  
पूछा : किस अमल के सबब ? कहने लगा : मैं उदीस लिखता था जब  
भी शाहे ખैरुल अनाम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ का जिके ખैर आता मैं सवाब की  
नियत से ‘صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ’ लिखता, इसी अमल की ब-र-कत से मेरी  
मग़ि़रत हो गइ. (الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص ٤٦٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 : येह बयान अभीरे अडले सुन्नत ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर  
सियासी तहरीक दा'वते छस्लामी के तीन रोज़ा छजतिमाअ (5,6,7 र-जबुल मुरज्जब  
1420 सि.हि. बरोज छतवार मदीनतुल औलिया मुलतान) में इरमाया. जइरी तरभीम  
के साथ तहरीरन छाजिरे बिदमत है. मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

इरमाने मुस्तफ़ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुर्रुदे पाक पढा अद्लाह उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्लम)

## दुर्रुदे की जगह ❌ लिपना हराम है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! سُبْحَانَ اللَّهِ ! दुर्रुदे शरीफ़ लिपने की भी क्या ખૂબ બ-ર-કતે हैं. ईस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा जब भी दुर्रुदे शरीफ़ पढ़ें या लिपें "सवाब की निश्चयत" होना जरूरी है और येह तो हर अमल में लाज़िम है, अगर किसी अस्थे अमल में अस्थी निश्चयत न होगी तो सवाब नहीं मिलेगा. ईस लिये हर हर अमल से कबूल अस्थी अस्थी निश्चयतों की आदत बनानी चाहिए. दुर्रुदे शरीफ़ लिपने के तअद्लुक से बा'ज म-दनी इल कबूल इरमाईये : जब भी नामे अकदस लिपें तो ज़बान से صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कहें भी और लिपें भी नीज़ मुकम्मल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिपना करें, ईस की जगह ईस का मुफ़फ़फ़ (Abbreviation) سلم या ❌ लिपना ना जाईज व सप्त हराम है. (माफूज अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 534) ईसी तरह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह और رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बजाये र मत लिपना कीजिये.

## दो कमसिन मुजाहिदीन

इज़रते सय्यिहुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : गज़वअे बद्र के दिन जब मैं मुजाहिदीन की सफ़ में षडा था, मैं ने अपने दाअें बाअें दो कमसिन अन्सारी लडके देभे. ईतने में ओक ने आहिस्ता से मुज से कहा : اَهْلُ تَعْرِفٍ اَبَا جَهْلٍ ! आप अबू जह्ल को पहचानते हैं ? मैं ने जवाब दिया : हां लेकिन तुम्हें उस से क्या काम है ? उस ने कहा : मुजे मा'लूम हुवा है वोह गुस्ताभे रसूल है, षुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! अगर मैं उस को देभ लूं तो उस

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शास्त्र मुज़ पर दुरुद पाक पठना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ब्रान)

पर टूट पड़ू या तो उस को मार डालू या जुद मर जाओं। दूसरे लडके ने भी मुज़ से इसी तरह की गुफ़्त-गू की. (शाईर इन दोनों नौ उम्र लडकों के जज्बात की अक्कासी करते हुअे कइता है)

कसम भाई है मर जाअेंगे या मारेंगे नारी को

सुना है गावियां देता है येड मडबूबे बारी को

उज्जरते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मजीद फ़रमाते हैं : अयानक मैं ने देभा के अबू जहल अपने सिपाहियों के दरमियान भडा है. मैं ने उन लडकों को अबू जहल की तरफ़ ईशारा कर दिया. वोह तलवारें लहराते हुअे उस पर टूट पडे और पै दर पै वार कर के उसे पछाड दिया. फिर दोनों अपने प्यारे और भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमत में डाजिर हो गअे और अर्ज की : या रसूलव्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम ने अबू जहल को ठिकाने लगा दिया है. सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ईस्तिफ़सार फ़रमाया : तुम में से किस ने उसे कत्ल किया है ? दोनों ही कइने लगे : मैं ने. शउ-शाडे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : क्या तुम ने अपनी पून आलूदा तलवारें साफ़ कर ली हैं ? दोनों ने अर्ज की : ज़ नही. भीठे भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन तलवारों को मुला-डगा कर के फ़रमाया : كَلَّا كَمَا قَتَلَهُ يا'नी तुम दोनों ने उसे कत्ल किया है.

(بخاری ج ۲ ص ۳۰۶ حدیث ۳۱۴۱)

दोनों मुन्नों का भी डस्वा पूब था बू जहल पर

भद्र के उन दोनों नन्हे ज़ं निसारों को सलाम

क्रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढ़ा तबकीक  
 वोह बंद भपत हो गया. (उंन)

## येह नौ उम्र कौन थे ?

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! येह इस्लाम के शाहीन सिफ़त कमसिन मुजाहिदीन जिन्हों ने लश्करे कुरैश के सिपह सालार, दुश्मने पुढा व मुस्तफ़ा और इस उम्मत के संगठित व सरकश फिरऔन अबू जह्ल को मौत के घाट उतारा उन के अस्माअे गिरामी हैं : मुआज और मुअव्विज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا. येह दोनों सगे भाई थे. इन के ईशके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सद हज़ार तहसीनो आफ़रीन और इन के वल्लअे जिहाद पर लाभों सलाम, के इस लडक-पन और खेलने कूदने के अय्याम में ही इनहों ने अपनी जिन्दगियों को म-दनी रंग में रंग लिया और राहे पुढा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के लश्करे कुफ़र के सिपह सालार अबू जह्ले जफ़ाकार से टकर ले ली और उस को जाको जून में लौटता कर दिया. किसी शाहर ने इन दोनों म-दनी मुन्नों के अबू जह्ल पर हम्ला करने की क्या जूज मन्जर कशी की है :

गिरा इस तरह कुन्दे जोड कर शहबाज का जोडा	के एक दम में सके जागो जगन का सिखिवा तोडा
जवानों के मुकाबिल पड्लवानों की तरह अडते	बराबर वार करते वार सहते यौमुपी लडते
हटाते मारते और काटते बढते गअे दोनों	बसाने मौज औजे रेग पर यढते गअे दोनों
उधर भू जह्ल भी करने लगा बयने की तदबीरें	न उस की धम्कियां काम आ सकीं बेकिन न तकरीरें
भरअे बाजूअे तकदीर तदबीरें नहीं यलतीं	जहां शमशीर यल जाती है तकरीरें नहीं यलतीं
हटा वोह देभ कर इन को येह फिर उस के करीं पछोंचे	जहां भू जह्ल पछोंचा दोनों लडके भी वहीं पछोंचे
न भागा जा सका तो उन को धमकाने लगा काफ़िर	सिपर के आसरे पर तैग यमकाने लगा काफ़िर

करमाने मुस्तक। على الله تعالى غلبه و ابوسلم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुइदुइ पाक पढा  
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी. (मुराद))

वोह पुन्ता-कार येह कमसिन, येह पैदल और वोह घोड़े पर लगा मरकब कुदाने अशमर्गी शेरों के ज़ोड़े पर  
मगर उश्शाक अपनी जान की परवा नहीं करते थुदा से उरने वाले मौत से डरगिज नहीं उरते  
डवा में गूँज उह्नीं रा'द की मानिन्द तकभीरें गिरीं भू जहल पर दो तेज भून आशाम शमशीरें  
दहन से आह निकली डाय से तैगो सिपर छूटी गिरा घोडा भी भा कर जम्ह दोनों की कमर टूटी  
जमीं धंसती थी जिस बट अन्त की अहना सी ठोकर पर पडा था भून में लिथडा हुवा मिट्टी की यादर पर  
वोह डडी और भूँ जिस पर उमेशा नाज रहता था वोही डडी शिकस्ता थी वोही अब भून बलता था  
जभां से यीभता और कुङ्क बकता ही रखा काकिर मददगारों को यारों सभ्त तकता ही रखा काकिर  
वोह जंगआवर रिसाला जिस के बल पर जोर था सारा उसी में घुस के दो कमजोर लडकों ने उसे मारा  
जवानो ! काबिले तकवीद है ईकदाम दोनों का जभीने लौहे गैरत पर लिषा है नाम दोनों का  
वोह गाजी थे मअे हुब्बे नबी का ज़ेश था उन को लभे कौसर पडोय कर शौके नोशा नोश था उन को

### मुश्किल अल्फाज के मयानी

कुन्दा : कन्धा. जाग : कव्वा. जगन : यील. बसान : मानिन्द. भौज :  
पानी की लहर. औज : बुलन्दी. रेग : धूल. करी : करीब. सिपर :  
ढाल. मरकब : सुवारी. अशमर्गी : गजबनाक. रा'द : बिजली की  
कडक. भून आशाम शमशीरें : भूँजार तलवारें. दहन : मुंह. तैग :  
तलवार. लईन : ला'नती. अदू : दुश्मन. शिकस्ता : टूटी हुई.  
रिसाला : हज़ार फौज का दस्ता. जभीन : पेशानी. लौह : तप्टी.  
मअे हुब्बे नबी : नबी की महब्बत की शराब.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइइ शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عمارة)

## लटकता बाजू

एक रिवायत के मुताबिक़ धन दानों भाँषियों में से उतरते सय्यिदुना मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इरमान है : मैं अपनी तलवार लहराता हुआ अबू जहूल पर टूट पड़ा मेरे पहले वार से उस की टांग की पिंडली कट कर दूर जा गिरी. उस के बेटे इकरमा (जो बा'द में मुसल्मान हुआ) ने मेरी गरदन पर तलवार का वार किया मगर उस से मेरा बाजू कट गया और भाल के अके तस्मे के साथ लटकने लगा. सारा दिन लटकते हुआ बाजू को संभाले मैं दूसरे हाथ से दुश्मन पर तलवार चलाता रहा. लटकता बाजू लडने में रुकावट बन रहा था, लिहाजा मैं ने उसे पाँउ के नीचे दबा कर धीया जिस से जिल्द (या'नी भाल) का तस्मा टूट गया और मैं उस से आजाद हो कर फिर कुर्क़ार के साथ मसूक़े पैकार (या'नी जंग) हो गया. मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का ज़म् ठीक हो गया और ये लहरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के अल्टे भिलाइत तक जिन्दा रहे. उतरते अदलामा काज़ी धयाज़ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने धुने वहुअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की है, अत्मे जंग के बा'द उतरते सय्यिदुना मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपना कटा हुआ बाजू ले कर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में हाज़िर हुआ. तबीभों के तबीभ, अदलाह عَزَّوَجَلَّ के लबीभ, लबीभे लबीभ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने लुआभे दहन (या'नी मुबारक मुंह का थूक शरीफ़) लगा कर वो लकटा हुआ बाजू फिर कन्धे के साथ जोड दिया. (مَدَارِجُ النَّبِيِّ ج ٢ ص ٨٧)

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! अगर तोडने वाले का वुजूद है तो जोडने वाला भी मौजूद है.



करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (कोशिश)

अली के वासिते सूराज को फ़ैरने वाले

ईशारा कर दे के मेरा भी काम हो जाये

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अनोपा जगजा

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! सलाबअे किराम

مَنْ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ में एबादत के दौरान कैसा वजह सा तारी हो जाता था के उन्हें किसी तकलीफ़ का अेलसास ही नहीं होता था, जो हां, राहे जुदा एज़ुजल में जिहाद करना भी एबादत ही है. सय्यिदुना मुआज रज़ी अल्लु त्ताली अन्हे का भाल में लटक्ते हुअे हाथ के साथ लडना फिर उसे पाउं में दबा कर भीय कर भाल को तोड डालना येह अैसी भातें हैं जो दिवों में तुरतुरी पैदा कर दें मगर एन हजरात पर कुछ अैसी वारफ़तगी छाई होती थी के तकलीफ़ का अेलसास ही नहीं होता था. राहे जुदा एज़ुजल के एन ज़ांभाजों और ईस्लाम के हकीकी सर इरोशों के नकशे कदम पर यलते हुअे हमें भी दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िलों में सइर करना याहिये और राहे जुदा एज़ुजल में आने वाली तकालीफ़ हंसी जुशी बरदाशत करनी याहियें.

सीभने सुन्नतें काफ़िले में यलो लूटने रडमतें काफ़िले में यलो

होगी हल मुश्किलें काफ़िले में यलो पाओगे राडतें काफ़िले में यलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुबुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابن عساکر)

## अबू जह्ल का सर

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : कौन है जो अबू जह्ल को देख कर उस का डाल बताये ? तो हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसूद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जा कर लाशों में देखा तो अबू जह्ल जम्मी पडा हुवा दम तोड रहा था, उस का सारा बदन झौलाह में छुपा हुवा था, उस के हाथ में तलवार थी जो रानों पर रखी हुई थी, जम्भों की शिदत के बाईस अपने किसी उजूव को जुम्बिश नहीं दे सकता था. सय्यिदुना अब्दुल्लाह र्छने मसूद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस की गरदन पर पाँउ रखा, इस आलम में भी उस के तकब्बुर का आलम येह था के हकारत से बोल उठा : ओ बकरियों के यरवाहे ! तू बड़ी गिंयी और दुश्वार जगह पर यढ गया. (السيرة النبوية لابن هشام ص २१२-२१३) हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह र्छने मसूद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मैं अपनी कुन्द तलवार से अबू जह्ल के सर पर जर्बे लगाने लगा, जिस से तलवार पर उस के हाथ की गिरिङ्गत ढीली पड गई, मैं ने उस से तलवार भीय ली. जं कनी के आलम में उस ने अपना सर उठाया और पूछा : इत्ह किस की हुई ? मैं ने कहा : يَا نِيَّيْ اَللّٰهُ وَرَسُوْلَهُ ! अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये ही इत्ह है. फिर मैं ने उस की दाढी को पकड कर जन्जोडा और कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَخْرَاكَ يَا عَدُوَّ اللهِ ! या'नी उस अल्लाह र्छने का शुक्र है के जिस ने ओ दुश्मने छुदा ! तुजे जलील किया. मैं ने उस का पौद उस की गुद्दी से हटाया और उसी की तलवार से उस की गरदन पर जोरदार वार किया उस की गरदन कट कर सामने जा गिरी. फिर मैं ने उस के हथियार, जिरह वगैरा उतार लिये और उस

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરૂદ પઢો કે તુમહારા દુરૂદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ટર્મીન)

કા સર ઉઠા કર બારગાહે રિસાલત મેં હાઝિર હો ગયા ઓર અઝ્ કી : યા રસૂલલ્લાહ ﷺ ! યેહ દુશ્મને ખુદા અબૂ જહલ કા સર હૈ. સુલ્તાને મદીના ﷺ ને તીન બાર ફરમાયા : يا'نِي اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَعَزَّ اِلٰسْلَامَ وَاَهْلَهُ اِسْلَامِ اَوْر اَهْلَهُ اِسْلَامِ كُو اِسْ'જત બખ્શી. ફિર સરકારે આલી વકાર ﷺ ને સજદએ શુક અદા ક્રિયા. ફિર ફરમાયા : હર ઉમ્મત મેં એક ફિરઔન હોતા હૈ ઇસ ઉમ્મત કા ફિરઔન અબૂ જહલ થા.

(سُئِلَ الْهَدِيُّ ٤٦ ص ٥١-٥٢)

### अबू जहल की आभिरी बकवास

अबू जहल का जज़्बअे इनाद और अदावते रसूले रब्बुल इबाद तो देभिजे के टांगें कट चुकी हैं, सारा जिस्म ज़म्भों से यूर यूर है, मौत सर पर मंडला रही है, इस हालत में भी उस सप्त-ज्ञान शकिये अ-जली (या'नी हमेशा ही से बढ बप्त) की शकावत (या'नी बढ बप्ती) का आलम येह है के उस ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसूदि एँ ﷺ को कहा : “अपने नबी को मेरा येह पैगाम पड़ोया देना के मैं उम्र भर उस का दुश्मन रहा हूँ और इस वक्त भी मेरा जज़्बअे अदावत शदीद तर है.” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसूदि एँ ﷺ ने जब सरकारे वाला तबार ﷺ के दरबार में उस अ-जली बढ बप्त का येह जुम्ला अर्ज किया तो अब्दुल्लाह एँ के मडबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब ﷺ ने फरमाया : मेरी उममत का फिरऔौन तमाम उममतों के फिरऔौनों से जियादा संगदिल और कीना परवर है. मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) के फिरऔौन को जब (बहरे अहमर की) मौजों ने

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो  
रहमतें नाज़िल करमाता है. (प्राण)

अपने नरगे में ले लिया तो पुकार उठा :

قَالَ اٰمَنْتُ اَنْتَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

اٰمَنْتُ بِهٖ بَنُوۤا اِسْرَآءِیْلَ وَاَنَا

مِنَ الْمُسْلِمِیۡنَ ۙ (प ११, योनुस: १०)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बोला मैं

ईमान लाया के कोई सय्या मा'बूद नहीं

सिवा उस के जिस पर बनी ईस्राईल

ईमान लाये और मैं मुसल्मान हूँ.

मगर ईस उम्मत का फिरौन मरने लगा तो उस की ईस्लाम दुश्मनी और सरकशी में कभी के बजाये ईजाफ़ा हो गया.

(مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ج ३ ص ४३१، تفسير كبير ج १ ص २२४-२२५)

## कुदरत के निराले अन्दाज़

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के ली

निराले अन्दाज़ हैं बडे बडे जंग आज़माओं ने अबू जह्ल पर तलवारों

के वार किये मगर वोह न मरा, आबिरे कार दौ म-दनी मुन्नों ने उस को

गिरा दिया ! ईस डम्बे में वोह आज़िज़ और बे दस्तो पा हो गया,

खिलने जुलने की उस में सकत न रही. मगर उस सप्त-जान की रूह न

निकली, पुढा عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के आबिरे दम तक ईस के होशो हवास

काँठम रहे. ईस में छिक्मत येह थी के ईस गुइरो तकब्बुर के पुतले को

उस मजलूम व बेकस बन्दे के हाथों वासिले जहन्नम किया गया जो माली

खिड़ाज से ખाली, जिस्मानी खिड़ाज से कमजोर और कभीले के खिड़ाज से

भी बे यारो मददगार था. ईस्लाम लाने के सबब अबू जह्ल, हजरते

सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन मरउिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को गालियां बकता और

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सरे मुबारक के बाल पकड कर तमांये रसीद किया

करता था उस वक्त आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी किस्म की जवाबी कारवाई

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शाप्स है. (ज़िब्रिया)

करने से कासिर थे, आज वोही सहाबी अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की अता से उस की छाती पर सुवार हो गये, उस के सर को ठोकरें मार रहे हैं, अपने पाँउ तले रौंद रहे हैं, उस के हाथ से तलवारे आबदार छीन कर उसी की तलवार से उस का सर काट रहे हैं. जैसे वक्त में अबू जहूल बेहोश नहीं होश में है, अपनी तज़लील व रुस्वाँ का शुठिर रभता है लेकिन दम नहीं मार सकता. सय्यिदुना अब्दुद्लाह एब्ने मस्ठिद अपने कमज़ोर हाथों से उस का सरे गुडर काट कर, उठा कर अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना'लैने मुभा-रकैन के नीचे फेंक देते हैं. अबू जहूल की जिल्लत आभेज मौत जुम्हा कुफ़र व मुश्रिकीन और तमाम मुनाफ़िकीन व मुरतद्दीन के लिये ताज़ियानअे एभ्रत है. और यकीनन एज़्जत अद्लाह व रसूल और मुसल्मानों के लिये है जैसा के पारह 28 सू-रतुल मुनाफ़िकून आयत 8 में एर्शाद होता है :

وَاللّٰهُ الْعَزِيزُ وَلِىُّ الْمُؤْمِنِينَ  
وَلَكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلمُونَ ۝٨

तर-ज-मअे कज़ुल एभान : और एज़्जत तो अद्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िकों को ખबर नहीं.

### मुसल्मानों का सामाने जंग

भीठे भीठे एस्लामी भाएयो ! अबू जहूल गज़्वअे बद्र में कत्ल हुवा था. गज़्वअे बद्र का वाकिआ 17 र-मजानुल मुभारक 2 सि.हि. मकामे बद्र में पेश आया. एस में मुसल्मानों की ता'दाद बहुत कम या'नी सिर्फ़ 313 थी, एन के पास सिर्फ़ दो घोडे, 70 ठीट, शिक्स्ता

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुइदें पाक न पढे. (म)

कमानें, टूटे झूटे नेजे और पुरानी तलवारें थीं। मगर उन का जज़्बअे  
 धिमान्नी बे भिसाल था। उन्हें सामाने जंग पर नहीं अल्लाह व रसूल  
 ﷺ पर भरोसा था।

### कुङ्कार का सामाने जंग

अेक तरङ्ग मुसल्मानों की बे सरो सामान्नी का येह आलम है तो  
 दूसरी तरङ्ग दुश्मनाने भुदा व मुस्तफ़ा की ता'दाह अेक हज़ार है, उन के  
 पास 100 बर्क रङ्गतार घोडे हैं जिन पर 100 जिरह पोश जंगजू सुवार हैं,  
 700 आ'ला नस्ल के उंट हैं, पाने पीने के ज़पाईर के अम्बार उठाने वाले  
 बार भरदार जानवर मजीद भरआं, नव नव दस दस उंट रोजाना ज़ह  
 कर के लश्करे कुङ्कार की पुर तकल्लुङ्ग दा'वत का अेहतिमाम होता है, हर  
 शभ बजमे अैशो नशात भरपा की जाती है जिस में शराब के ज़म लुंढाअे  
 जाते हैं, भूब सूरत कनीजें अपने नाय और सेहूर अंगेज नग्मात से उन  
 की आतशे गैजो गज़ब भउकाती रहती हैं। धस के आ वुजूह गुलामाने  
 मुस्तफ़ा के येहरों पर तस्कीन व धत्मीनान का नूर भरस रहा है धन के  
 धिलों में धिमान व यकीन की शम्भ इरोज़ां है, शराबे वहुदत के नशे में  
 सरशार अपने परवर दगार جَلَّ وَجَلَّ का नामे मुबारक भुलन्ध करने के लिये  
 और उस के प्यारे मलभूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पाकीज़ा धीन का परयम  
 उंग्या लहराने के शौक में सर धउ की बाज़ी लगाने का अज़्म बिल जज़्म  
 किये रिज़ाअे धलाही की मन्जिल की तरङ्ग मस्ताना वार बढे यले ज़ा रहे  
 हैं, धन्हें अपनी ता'दाह की कमी, सामाने जंग की किल्लत और दुश्मन की  
 कसीर ता'दाह और सामाने हर्ब की कसरत की कोध परवाल नहीं, भातिल  
 के संगीन कल्यों को पाउ की ठोकरो से रेज़ा रेज़ा कर देने का अज़्म धन्हें

ਕਿਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ੀ، على الله تعالى عليه وسلم : जिस نے موز پر روزے جوموآا دے سو ہار دھڑدے پاک پدا اوس کے دے سو سال  
 کے گوناوے موزا کے ڈوگے. (کرم)

ਮਾਇਏ ਭੇ ਆਭ (ਯਾ'ਨੀ ਭਿਗੈਰ ਪਾਨੀ ਕੀ ਮਘਲੀ) ਕੀ ਟਰਫ ਟੜਪਾ ਰਫਾ  
 ਹੈ, ਸ਼ੌਕੇ ਸਫਾਫਟ ਈਠੇਂ ਭੇਯੈਨ ਕ੍ਰਿਯੇ ਫੇਟਾ ਹੈ, ਜਾਂ ਨਿਸਾਰਾਨੇ ਭਫਰ ਕੀ  
 ਅ-ਝ-ਮਤੋ ਸ਼ਾਨ ਕਾ ਭਯਾਨ ਕਰਫੇ ਫੁਝੇ ਸ਼ਾਏਰ ਕਫਟਾ ਹੈ :

ਵਫਾਂ ਸੀਨੌਂ ਮੇਂ ਕੀਨਾ ਥਾ ਸਕਾਵਟ ਥੀ ਅਫਾਵਟ ਥੀ	ਯਫਾਂ ਝੌਕੇ ਸਫਾਫਟ ਔਰ ਈਮਾਂ ਕੀ ਫਫਾਵਟ ਥੀ
ਮੁਜ਼ਾਫਿਫ ਜਿਨ ਕੋ ਵਾ'ਫੇ ਯਾਫ ਥੇ ਆਯਾਫੇ ਕੁਰਆਂ ਕੇ	ਯਫੇ ਥੇ ਸੁਭਫ ਸੇ ਟਟ ਕਰ ਮੁਕਾਭਿਫ ਝੌਝੇ ਸੈਂਟਾਂ ਕੇ
ਝੋ ਗੈਰਟ ਮਠਫ ਰਾਫੇ ਫਕ ਮੇਂ ਥੇ ਮਸੜਕੇ ਜਾਂਭਾਝੀ	ਅਭਫ ਟਕ ਨਾਮ ਈਨ ਕਾ ਫਫੋ ਗਯਾ ਅਫਵਾਫ ਕੇ ਗਾਝੀ
ਗਾਝਾ ਫਕ ਕੇ ਫਿਯੇ ਫਕ ਕੇ ਫਿਯੇ ਈਨ ਕੀ ਸਫਾਫਟ ਥੀ	ਯੇਫ ਝਨਾ ਭੀ ਈਭਾਫਟ ਥਾ ਯੇਫ ਮਰਨਾ ਭੀ ਈਭਾਫਟ ਥੀ
ਸਫਾਫਟ ਕਾ ਫਫਊ ਜਿਨ ਕੇ ਰੁਭੌਂ ਕਾ ਭਨ ਗਯਾ ਗਾਝਾ	ਯੁਫਾ ਥਾ ਈਨ ਕੀ ਯਾਫਿਰ ਫਾਏਮੀ ਜਠਨਟ ਕਾ ਫਰਵਾਝਾ
ਸਫਾਫਟ ਆ'ਫਾ ਮਠਿਫਫ ਹੈ ਮੁਸਫਮਾਨੀ ਸਆਫਟ ਕੀ	ਵਫਫ ਯੁਸ਼ ਕਿਸਮਟ ਹੈਂ ਮਿਫ ਜਾਝੇ ਜਿਠੇਂ ਫੌਫਟ ਸਫਾਫਟ ਕੀ
ਸਫਾਫਟ ਯਾ ਕੇ ਫਰਸ਼ੀ ਝਿਠਏ ਜਾਫੀਫ ਫਫੋਟੀ ਹੈ	ਯੇਫ ਰੰਗੀਂ ਸ਼ਾਮ, ਸੁਭਫੇ ਈਫ ਕੀ ਟਮਝੀਫ ਫਫੋਟੀ ਹੈ
ਸਫੀਫ ਈਸ ਫਾਫੇ ਝਾਨੀ ਮੇਂ ਫਝੇਸ਼ਾ ਝਿਠਫਾ ਰਫਟੇ ਹੈਂ	ਝਮੀਂ ਯਰ ਘਾਫ ਟਾਰੌਂ ਕੀ ਟਰਫ ਟਾਭਿਠਫਾ ਰਫਟੇ ਹੈਂ
ਈਸੀ ਰੰਗਟ ਕੋ ਹੈ ਟਰਝਫ ਈਸ ਫੁਨਯਾ ਕੀ ਝੀਨਟ ਯਰ	ਯੁਫਾ ਰਫਮਟ ਕਰੇ ਈਨ ਆਸ਼ਿਕਾਨੇ ਯਾਕ ਟੀਨਟ ਯਰ
ਸਮਾ ਸਕਫੀ ਹੈ ਕ੍ਰਯੁਂਕਰ ਫੁਭਫੇ ਫੁਨਯਾ ਕੀ ਫਫਾ ਫਿਫ ਮੇਂ	ਭਸਾ ਫਫੋ ਜਭ ਕੇ ਨਕਸ਼ੇ ਫੁਭਫੇ ਮਫਫਯਫੇ ਯੁਫਾ ਫਿਫ ਮੇਂ
ਮੁਫਮਮਫ ਕੀ ਮਫਫਯਟ ਫੀਨੇ ਫਕ ਕੀ ਸ਼ਰਫੇ ਅਫਵਫ ਹੈ	ਈਸੀ ਮੇਂ ਫਫੋ ਅਗਰ ਯਾਮੀ ਟੋ ਸਭ ਕੁਫ਼ ਨਾ ਮੁਕਮਮਫ ਹੈ
ਮੁਫਮਮਫ ਕੀ ਗੁਫਾਮੀ ਹੈ ਸਨਫ ਆਝਾਫ ਫਫੋਨੇ ਕੀ	ਯੁਫਾ ਕੇ ਫਾਮਨੇ ਟੌਫੀਫ ਮੇਂ ਆਭਾਫ ਫਫੋਨੇ ਕੀ
ਮੁਫਮਮਫ ਕੀ ਮਫਫਯਟ ਆਨੇ ਮਿਫਫਟ ਸ਼ਾਨੇ ਮਿਫਫਟ ਹੈ	ਮੁਫਮਮਫ ਕੀ ਮਫਫਯਟ ਝਫੇ ਮਿਫਫਟ ਜਾਨੇ ਮਿਫਫਟ ਹੈ
ਮੁਫਮਮਫ ਕੀ ਮਫਫਯਟ ਯੂਨ ਕੇ ਰਿਸ਼ਫੌਂ ਸੇ ਭਾਫਾ ਹੈ	ਯੇਫ ਰਿਸ਼ਫਾ ਫੁਨਯਵੀ ਕਾਨੂਨ ਕੇ ਰਿਸ਼ਫੌਂ ਸੇ ਭਾਫਾ ਹੈ
ਮੁਫਮਮਫ ਹੈ ਮਫਾਝੇ ਆਫਮੇ ਈਜਾਫ ਸੇ ਯਾਰਾ	ਯਿਫਰ, ਮਾਫਰ ਭਿਰਾਫਰ ਮਾਫ ਜਾਂ ਔਫਾਫ ਸੇ ਯਾਰਾ
ਯੇਫੀ ਜਝਭਾ ਥਾ ਈਨ ਮਫਾਨੇ ਗੈਰਟ ਮਠਫ ਯਰ ਟਾਰੀ	ਫਿਭਾਏ ਜਿਨ ਕੇ ਫਾਥੌਂ ਫਕ ਨੇ ਯਾਫਿਫ ਕੋ ਨਿਗੁਂ-ਸਾਰੀ





फ़रमाने मुस्तफ़ी ﷺ: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे शुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (मसूिम)

## फ़िरिशतों के झरीओ मद्द

अमीरुल मुअमिनीन, एमामुल आदिलीन, उजरते सय्यिदुना उमर फ़ाउके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : ढद्र के रोज सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किब्ला रु षरे ढो गअे और अपने दोनों हाथ ढारगाहे एंलाही جَلَّ جَلَّاهُ में डैला दिये और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से फ़रियाद शुइअ कर दी यहां तक के मइवियत (या'नी एस्तिगराक) के आलम में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुढारक कन्धे से यादरे पाक उमीन पर तशरीफ़ ले आँ, सय्यिदुना सिदीके अकढर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तेजी से आअे और यादर शरीफ़ उठा कर सुल्ताने ढहरो ढर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मुढारक कन्धे पर डाल दी, फ़िर वालिहाना अन्दाज में पीछे से सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सीने से लगा लिया और अर्र की : आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप की अपने रढ عَزَّوَجَلَّ से येड दुआ काड़ी है. यकीनन अद्लाड तढा-र-क व तआला अपना अड्द पूरा इरमाओगा. उसी वक्त सय्यिदुना जिब्रईले अमीन الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ येड आयत (या'नी पारड 9 सू-रतुल अन्डाल आयत 9) ले कर हाजिरे षिदमते अकदस हुअे :

اِدْتَسَعِيْشُوْنَ رَاْبِكُمْ فَاسْتَجَابَ  
لَكُمْ اَنِّي مُبِدِّكُمْ بِاَلْفِ مِّنَ  
السَّلِيْكَةِ مُرْدِفِيْنَ ⑤

तर-४-मअे कन्जुल एमामान : षढ तुम अपने रढ से फ़रियाद करते थे तो उस ने तुम्हारी सुन ली के में तुम्हें मद्द देने वाला हूँ उजार फ़िरिशतों की कितार से.

(मुसुिम व १११ हदिथ १११३)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मे'र २१४ रसूलों के सरता४, साहिबे मे'र २१४

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अक दुइद शरीक पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज लिभता है और कीरात उलुद पडाउ जितना है. (मुराज़)

की दुआओं को कबूलिय्यत का ताज पहना दिया गया. मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं :

इज्जत का सेहरा इनायत का जोडा दुल्हन बन के निकली दुआये मुहम्मद

इज्जत ने जुक कर गले से लगाया बढी नाज से जब दुआये मुहम्मद

### जिब्रिहल عَلَيْهِ السَّلَام का घोडा

“अजाधनुल इरफ़ान” में है, उजरते इब्ने अब्बास ने इरमाया : मुसल्मान उस रोज कुफ़्फ़ार का तआकुभ (या'नी पीछा) इरमाते थे और काफ़िर मुसल्मान के आगे आगे भागता जाता था अयानक ठीपर से कोडे की आवाज आती थी और सुवार का येह कलिमा सुना जाता “أَقْبِمُ حَيْرُومُ” या'नी “अै हैज़ूम ! आगे बढ” (हैज़ूम उजरते जिब्रिहल عَلَيْهِ الصَّلَوَةُ وَالسَّلَام के घोडे का नाम है) और नजर आता था के काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तलवार से उडा दी गई और येहरा जम्भी हो गया. सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तरफ़ से जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पिदमत में येह कैफ़िय्यात बयान की गई तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने इरमाया : “येह तीसरे आस्मान की मदद है.” (मुस्लिम स १११) अक बढी सहाबी उजरते अबू दावूद माज़नी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) इरमाते हैं : मैं गज़्वअे बद्र में अक मुशिरक की गरदन मारने के दर पै हुवा, मेरी तलवार पछोंयने से पडले ही उस का सर कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया के इस को किसी और ने कत्ल किया. (रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) उजरते सलूल बिन हुनैफ़ (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) इरमाते हैं : बद्र के रोज हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उस की तलवार पछोंयने से कबल ही मुशिरक का सर तन से जुदा हो कर गिर जाता था. (अिनास ३३) (अजाधनुल इरफ़ान, स. 335, 336, मुलज्जसिन व मुभर्रजान)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइरे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (طبرانی)

## दुआ मोमिन का हथियार है

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! कैसे ही कठिन हालात पैदा हो जायें ह में नज़र अरबाब पर नहीं बल्के मुसब्बिबुल अरबाब عَلَّ جَلَّ पर रखनी याहिये और दुआ से हरगिज़ ग़फ़लत नहीं करनी याहिये. के फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ है : **لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ** या'नी दुआ मोमिन का हथियार है. (हदीथ ११०/२१) गज़वअे भद्र में दुश्मनों को अपनी भारी ता'दाद और कस्ते अस्लिहा पर नाज़ था और मुसल्मानों को अद्लाह उज़्र और उस के प्यारे महुबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर भरोसा. मुज़ाहिदीन में ज़ूबअे शहादत कूट कूट कर भरा हुवा था और मुसल्मानों का बय्या बय्या शौके शहादत से सरशार था. युनान्थे

## जो रोता है उस का काम होता है

मशहूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के छोटे भाई हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो अभी नौ उम्र ही थे गज़वअे भद्र के मौकअ पर झौंज की तय्यारी के वक्त एधर उधर छुपते फिर रहे थे. हज़रते सय्यिदुना सा'द रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने तअज्जुब से पूछा : क्यूं छुपते फिर रहे हो ? कहने लगे : कहीं औसा न हो के मुझे सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ देख लें और छोटा समज कर जिहाद पर जाने से मन्अ फ़रमा दें. भय्या ! मुझे राहे जुदा عَلَّ جَلَّ में लउने का बडा शौक है, काश ! मुझे शहादत नसीब हो जाये. आभिरे कार सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की तवज्जुह शरीफ़ में आ ही गये और उन को कम

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुर्रद पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्ल)

उम्री की वजह से मन्अ इरमा दिया. उजरते सय्यिदुना उमैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ग-ल-भअे शौक के सभभ रोने लगे, “जो रोता है उस का काम होता है” के भिस्टाक उन का आरजूअे शहादत में रोना काम आ गया और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ँजजत भर्भमत इरमा दी. जंग में शरीक हो गअे और दूसरी आरजू भी पूरी हो गई के उसी जंग में शहादत की सआदत भी नसीब हो गई. आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बडे भाई उजरते सय्यिदुना सा’द भिन अभी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मेरे भाई उमैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ छोटे थे और तलवार बडी थी लिहाजा मैं उस की हमाईल के तस्भों में गिरहें लगा कर ँंथी करता था. (كتاب المغازی للواقدي ج ١ ص ٢١)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! छोटा हो या बडा राडे भुदा عَزَّ وَجَلَّ में जान कुरभान करना ही उन की जिन्दगी का भक्सदे वहीद था, लिहाजा काम्याभी भुद आगे बढ कर उन के कदम यूभती थी. उजरते सय्यिदुना उमैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का जज्भअे जिहाद और शौके शहादत आप ने मुला-हजा इरमाया और बडे भाई सय्यिदुना सा’द ईभने अभी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के तआवुन के बारे में भी आप ने सुना. भेशक आज भी बडा भाई अपने छोटे भाई का और बाप अपने बेटे का तआवुन करता है मगर सिई दुन्यवी मुआ-मलात में और इकत दुन्यवी मुस्तकिभल रोशन करने की गरज से. अइसोस ! हमारे पेशे नजर सिई दुन्या की यन्द रोजा जिन्दगी का सिंघार है जब के सहाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की निगाहों में आभिरत की जिन्दगी की बहार थी. हम दुन्यवी आसाईशों पर निसार हैं और वोह उभरवी राहतों के तलभ गार थे. हम दुन्या की भातिर हर तरह की मुसीबतें जेलने के लिये तय्यार रहते

ईरमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जो शपस मुज पर दुइद पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़हूर)

हैं और वोह आभिरत की सुर्ष-इई की आरजू में हर तरह की राहते दुन्या को ठोकर मार कर सप्त मसाईओ आलाम और भून आशाम तलवारों तले भी मुस्कुराते रहे.

रब्बे का'बा के परस्तार वोह मदाने जलीव !

पासवाने हरम, वारिसे ईमाने जलीव !

वोह सरे इशें जमीं ईज़्जते डव्वा का सुभूत

वोह तहे यर्षे बरीं अ-ज-मते आदम की दलीव

रास्त गुफ्तारो कुशादा दिवो बेदार दिमाग

मुदतुल उम्र जो आइत के सायों में पले

कभी पाबन्दे सवासिल कभी शो'वों के डरीक

कभी अंगारों पे लौटे कभी कांटों पे यले

कभी तपते हुअे पथर की सिलें सीनों पर

कभी कांधों पे उठाअे हुअे वोह भारे गिरां

कभी पुशतों पे सवााषों के सुलगते हुअे दाग

कभी येडरों पे तमांचों के अलम-नाक निशां

कभी नेजों के सजावार कभी तीरों के

कभी ता'नों के क्यूके कभी इाकों से निढाल

कभी यक्की की मशकत कभी तन्हाई की केँद

कभी अपनों की मलामत कभी गैरों का उभाव

कभी बोडतान तराजी, कभी दुश्नामे गलीज

कभी तज़्ज़ीको तमरभुर, कभी शुब्हातो शुक्क

कभी इ़डानी अजिय्यत, कभी तोडीने जमीर

कभी ईंटों से तवाजोअ, कभी कोडों का सुलूक

कभी मड्भूस घरों में तो कभी जाना बहर

यीथडे तन के निगडवान, कभी वोह भी नहीं !

तिश्नगी का हें वोह आलम के ईवाही तौबा

डल्क को याछिये थोडी सी नमी वोह भी नहीं

आजमाईश के लपकते हुअे हंगामों में

वक्त ने उन के निशानाते कदम देभे हें

तप्तअे दार पे आअे तो उसे यूम लिया

अैसे छ-दार भी तारीफ ने कम देभे हें

किस अजीमत के थे मालिक येड नुइसे कुदसी

जो पडी वक्त के हाथों वोह कडी जेव गअे

सिर्फ ईस्लाम की खातिर, इकत अल्लाह के लिये

जान से भेलना आता था उन्हें भेल गअे

डम तक ईस्लाम जो पछोंया तो सिर्फ उन के तुइव

येड गुलामाने भुदा नूरे रिसालत के अमीं

सर बसर पैकरे ईसार, मुजसम्म ईमां

डशर तक ईन सा डो पैदा कोई मुम्किन ही नहीं

ફરમાને मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा तउकीक वोह बढ अप्त हो गया. (उंउं)

## मुश्किल अल्फ़ाज के मयानी

परस्तार : पूजा करने वाला. पासबान : मुहाफ़िज़. यर्भे बरीं : बुलन्द आस्मान. रास्त गुफ़्तार : सय बोलने वाला. पाबन्दे सलासिल : जन्हरों में जकडा हुआ. डरीफ़ : मुकाबला करने वाला. दुश्नामे गलीज : गन्दी गालियां. तज़्डीक : हंसी उडाना. तमस्पूर : मज़ाक उडाना. मड्बूस : कैद. पाना बढर : घर से निकाल देना. तिशनी : प्यास. तप्तअे दार : झंसी का तप्ता. अज़ीमत : अज़्म व धरादा. नुडूसे कुदसी : पाक ज़नें.

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! बयान को इप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं. ताजदारे रिसालत, शह-शाडे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे डिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मड्बगत की उस ने मुज़ से मड्बगत की और जिस ने मुज़ से मड्बगत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा.

(ابن عساکر ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसने मुझ पर एक बार दुइडे पाक पढा अदलाह उइस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

“या रब्बल ईबाद ! मक्के मदीने की जियारत अता इरमा”

के बतीस दुइइकी निरबत से सइर के 32 म-दनी इल

❁ शरअन मुसाइर वोह शप्स है जो तीन दिन के इंसिले तक जाने के इरादे से अपने मकामे ईकामत म-सलन शहर या गाँ से बाहर हो गया. भुशकी में सइर पर तीन दिन की मसाइत से मुराद साढे सत्तावन मील (या'नी तकरीबन 92 किलो मीटर) का इंसिला है (इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 8, स. 243, 270) ❁ शर-ई सइर करने वाले के लिये जरूरी है के वोह सइर के जरूरी पेश आमदा या'नी सइर में पेश आने वाले अहकाम सीष युका हो. (मक-त-अतुल मदीना का रिसाला “मुसाइर की नमाज” का मुता-लआ निहायत मुईद है) ❁ जब सइर करना हो तो बेहतरे येह है के पीर, जुमा'रात या इइते को करे (मुलभ्भस अज इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 23, स. 400) ❁ सरकारे मदीना مُحَمَّدِ بْنِ الْمُثَنَّى رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सय्यिदुना जुबैर बिन मुत्थम को सइर में अपने सब रु-इका से जियादा भुशाला रहने के लिये रवानगी से कब्ल येह विई पढने की तल्कीन इरमाई : **❶** सू-रतुल काकिरुन **❷** सू-रतुन्नसर **❸** सू-रतुल ईप्लास **❹** सू-रतुल इलक **❺** सू-रतुन्नास. हर सूरत अक अक बार और हर अक की इन्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ और सब से आबिर में त्नी अक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ लीजिये, (ईस तरह सूरतें पांय होंगी और बिस्मिल्लाह शरीफ़ छ बार)

इरमाने मुस्तक़ा عَمَلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

सय्यिदुना जुबैर बिन मुत्सिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मैं यूं तो साहिबे माल था मगर जब सफ़र करता तो (सब रु-इका से) बट्टडाल छो जाता, मजकूरा सूरतें सफ़र से क़बल हमेशा पढनी शुइअ कीं उन की ब-र-कत से वापसी तक भुशडाल और दौलत मन्द रहता (۷۳۸۲ حدیث ۲۶۰ ص ۶۷ ابو یعلیٰ)

❁ यलते वक्त सब अजीजों दोस्तों से मिले और अपने कुसूर मुआफ़ कराओ और अब उन पर लाज़िम है के दिल से मुआफ़ कर दें (बहारे शरीअत, जिल्द अय्वल, स. 1052) ❁ लिबासे सफ़र पहन कर घर में यार रक़अत नफ़ल اَلْحَمْدُ और قُلْ (هُوَاللّٰهُ) की पूरी सूरह) से पढ कर बाहर निकले. वोह रक़अतें वापस आने तक उस के अह्ल व माल की निगहबानी करेगी. (अज़न) ❁ दो रक़अत ली पढी जा सकती हैं, हदीसे पाक में है : “किसी ने अपने अह्ल के पास उन दो रक़अतों से बेहतर न छोडा, जो ब वक्ते इरादओ सफ़र उन के पास पढीं” (مصنّف ابن ابی شیبہ ۱ ج ص ۱۰۹)

❁ सफ़र में तीन या इस से ज़ियादा इस्लामी ल्माई हों तो अेक को “अमीर” बना लें के सुन्नत है. जैसा के हदीसे पाक में है : “जब सफ़र में तीन शप्स हों तो अेक को अपना अमीर बना लें” (ابوداؤد ۳ ج ص ۵۱ حدیث ۲۶۰۹)

❁ इस (या'नी अमीर बनाने) में कामों का इन्तिज़ाम रहता है, सरदार (या'नी अमीर) उसे बनाओ जो भुश भुल्क (या'नी बा अफ्लाक) आकिल दीनदार हो, सरदार (या'नी अमीर) को याहिये के रफ़ीकों के आराम को अपनी आसाईश पर मुकदम रभे (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1052)

❁ आईना, सुरमा, कंधा, मिस्वाक साथ रभे के सुन्नत है (अज़न, स. 1051)



करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غُلِبُوا بِهِ وَسَلِمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदं पाक न पढा तलक़ीक़ा वोह बढ भप्त हो गया. (हिन)

❁ जिक्कुल्लाह से दिल बहलाये के इरिश्ता साथ रहेगा, न के (बुरे) शे'र व लग्वियात (या'नी बेहूदा बातों) से के शैतान साथ होगा (इतावा र-जविय्या मुभर्रज़, जि. 10, स. 729) ❁ अगर दुश्मन या डाकू का भौंक हो तो सूरे "لَا يَلْفُ" पढ लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर जला से अमान मिलेगी. येह अमल मुजर्रब है (الحسن الحسين ص १०) ❁ सफ़र हो या हज़र (या'नी क्रियाम) जब भी किसी गम या परेशानी का सामना हो **حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ** और **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ** कसरत पढिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुश्किल आसान होगी. ❁ रास्ते की यढाई की तरफ़ या सीढियों पर यढते हुअे नीज़ बस वगैरा जब सडक की ठिंयी जानिब ज़रही हो तो "اللَّهُ أَكْبَرُ" और सीढियों या ढलवान से उतरते हुअे "سُبْحَانَ اللَّهِ" कडिये ❁ अगर कोई शप्स सफ़र पर ज़रहा हो तो उस (मुसाफ़िर) से मुसा-इहा करे या'नी हाथ मिलाये और उस के लिये येह दुआ मांगे : **أَسْتَوْذِعُ اللَّهَ دِينِكَ وَأَمَانَتِكَ وَخَوَائِمِ عَمَلِكَ** : मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे अमल के भातिमे को अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के सिपुई करता हूँ (अिा ص ११) ❁ मुकीम के लिये मुसाफ़िर येह दुआ पढे : **أَسْتَوْذِعُكَ اللَّهُ الَّذِي لَا يُضِيعُ وَدَائِعَهُ** : मैं तुम्हें अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के सिपुई करता हूँ जो सौंपी हुई अमानतों को जाअेअ नहीं करमाता (अिन ماجه حديث १२४७/३/३१२) ❁ मन्जिल पर उतरते वक्त येह पढिये : **أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ** : मैं अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदुइ पाक पढा।  
(उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अल-अवाम)

कामिल कलिमात के वासिते से सारी मज्लूक के शर से पनाह मांगता हूँ.  
 ﴿لَوْ أَنَّ الْعَالَمِينَ لَعَفُوا عَنِّي إِلَّا آبَاءِيَ وَإِبْنِيَّ وَأَهْلِيَّ وَأَخِيَّ إِذْ أَصَابَ مَرْجِسًا فَأَخَذَهُ فِي جَسَدِهِ كَالَّذِي خَطَبْتَهُ أَذًى كَالْبَعْدَنِيِّ جَدًّا﴾  
 उर नुकसान से बचेगा (अल-अहसिन १४) मुसाफ़िर की दुआ  
 कबूल होती है, लिहाजा अपने लिये, अपने वालिदैन व अहलो एयाल  
 और आम मुसल्मानों के लिये दुआओं कीजिये ✽ सफ़र में कोई शप्स  
 बीमार हो गया या बेहोश हो गया तो उस के साथ वाले उस मरीज  
 की ज़रूरियात में उस का माल बिगैर एंजाजत ખર્च कर सकते हैं  
 ﴿رُدُّ الْمُنْحَارِ ۙ ص १ ۙ ۳३४-३३०﴾, अहारे शरीअत, जि. ३, स. 222 ✽ मुसाफ़िर पर  
 वाजिब है के नमाज़ में कसर करे या'नी यार रकअत वाले इर्ज़ को दो पढे  
 एंस के डक में दो ही रकअतें पूरी नमाज़ है (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 743,  
 ۱۳۹/۱۷۷) ✽ मगरिब और वित्र में कसर नहीं ✽ सुन्नतों में कसर नहीं  
 अल्के पूरी पढी जायेगी, भौड़ और रवा रवी (या'नी घबराहट) की हालत  
 में सुन्नतें मुआज़ हैं और अम्न की हालत में पढी जायेगी (۱۳۹/۱۷۷) ✽  
 ✽ कोशिश कर के हवाएँ जहाज़ या रेल या बस में जैसे वक्त सफ़र  
 कीजिये के बीच में कोई नमाज़ न आये ✽ सोने के अवकात में हरगिज़  
 ऐसी गइलत न हो के مَدَامَ اللَّهُ كَرِهَ نमाज़ कजा हो जाये ✽ दौराने सफ़र  
 भी नमाज़ में हरगिज़ कोताही न हो, पुसूसन हवाएँ जहाज़, रेलगाडी  
 और लम्बे रूट की बस में नमाज़ के लिये पडले ही से वुजू तय्यार रबिये  
 ✽ रास्ते में बस खराब हो जाये तो ड्राईवर या मालिकाने बस वगैरा को  
 कोसने और बक बक कर के अपनी आखिरत दाव पर लगाने के बजाये

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

सब्र से काम लीजिये और जन्नत की तलाश में जिक्रो दुर्रद में भगूल हो जाँयें ❀ रेल, बस वगैरा में टीगर मुसाफ़िरो के हक्के पडोस का जयाल रभते हुअे उन के साथ भूब हुस्ने सुलूक कीजिये, बेशक भुद तकलीफ़ उठा लीजिये मगर उन को राहत पछोंयाँयें ❀ बस वगैरा में यिल्वा कर भातें कर के और जोर से कडूकहे लगा कर दूसरे मुसाफ़िरो को अपने आप से बढजन मत कीजिये ❀ भीड के मौकअ पर किसी जँफ़ या मरीज को देखें तो ब निथ्यते सवाब उस को बस वगैरा में ब ईसरार अपनी निशस्त पेश कर दीजिये ❀ उत्तल ईम्कान फ़िल्मों और गाने बाजों से पाक बस और वेगन वगैरा में सफ़र कीजिये ❀ सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोहफ़ा लेते आँयें के इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जब सफ़र से कोई वापस आये तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ उदिय्या (या'नी तोहफ़ा) लाये, अगर्चे अपनी जोली में पथर ही डाल लाये” (ابن عساکر ۳/۵۲) ❀ शर-ई सफ़र से वापसी में मक़रुब वक्त न हो तो सब से पहले अपनी मस्जिद में और जब घर पछोंये तो घर पर भी दो रकअत नज़ल पढिये.

उजारों सुन्नतें सीधने के लिये मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ दौ कुतुब (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बुहारे शरीअत” ख़िस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ हुइए शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (अबू जहल)

का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काइलें में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सइर भी है.

बूटने रडमतें काइले में यलो सीपने सुन्नतें काइले में यलो

डोंगी डल मुश्किलें काइले में यलो अत्म डों शामतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तालिबे गमे मदीना व  
भकीअ व मजिदिरत व  
बे हिसाब जन्नतुल  
किरदीस में आका  
का पडोस



यकुम मुइरमुल डराम 1434 हि.

16-11-2012

### येह रिसाला पठ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाह वगैरा में मक-त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इूलों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों को ब निय्यते सवाब तोडई में देने के लिये अपनी हुकानों पर भी रसाईल रभने का मा'भूल बनाईये, अज्बार इरोशों या बअ्यों के जरीअे अपने मडदले के घर घर में माडाना कम अज कम अेक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी इूलों का पेम्फ्लेट पडोया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه و آله وسلم: मुज पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابو یسلی)

## ફેહરિસ

ઉન્વાન	સંખ્યા	ઉન્વાન	સંખ્યા
દુરુદ શરીફ લિખને વાલે કી મઙ્કિરત હો ગઈ	1	મુસલમાનોં કા સામાને જંગ	11
દુરુદ કી જગહ ۷ લિખના હરામ હૈ	2	કુફકાર કા સામાને જંગ	12
દો કમસિન મુજાહિદીન	2	મુશિકલ અલ્ફાજ કે મઆની	14
યેહ નૌ ઉમ્ર કૌન થે ?	4	હેરત અંગેઝ જઝબે કા રાઝ	14
મુશિકલ અલ્ફાજ કે મઆની	5	ફિરિશતોં કે ઝરીએ મદદ	15
લટકતા બાઝૂ	6	જિબ્રઈલ عليه السلام کા ઘોડા	16
અનોખા જઝબા	7	દુઆ મોમિન કા હથિયાર હૈ	17
અબૂ જહલ કા સર	8	જો રોતા હૈ ઉસ કા કામ હોતા હૈ	17
અબૂ જહલ કી આખિરી બકવાસ	9	મુશિકલ અલ્ફાજ કે મઆની	20
કુદરત કે નિરાલે અન્દાઝ	10	સફર કે 32 મ-દની ફૂલ	21

## مآخذ و مراجع

મટબુએ	કતાબ	મટબુએ	કતાબ
દારાલકતબ العلمیة بیروت	السيرة النبوية	مكتبة المدينة باب المدينة	قران مجید
દારાલકતબ العلمیة بیروت	دلائل النبوة	دار احیاء التراث العربی بیروت	تفسیر کبیر
દારાલકતબ العلمیة بیروت	سبل الهدی	دارالفکر بیروت	تفسیر درمنثور
دارالقلم دمشق	محمد رسول الله	مكتبة المدينة باب المدينة	خرائن العرفان
مرکز اہلسنت برکات رضابند	مدارج النبوة	دارالکتاب العلمیة بیروت	بخاری
مؤسسة الريان بیروت	القول البدیع	دارانن حزام بیروت	مسلم
مكتبة المدينة باب المدينة	بہار شریعت	دارالکتاب العلمیة بیروت	مستدراک بیعی
مكتبة المدينة باب المدينة	وسائل بخشش	مؤسسة الأعلیٰ للمطبوعات بیروت	کتاب المغازی

## सुन्नत की भहारें

रुम्बाही के मसके मसके म-दनी माहोल में अ कसरत सुन्नतों सीभी और खिभाई जती हैं, हर जुमा रात ईशा की नमाज के बाद आप के शहर में होने वाले दा'वते ईस्लामी के हकतावार सुन्नतों परे ईजतिमाअ में रिजाअे ईवाही के विषे अकरी अकरी निष्यतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी इल्तिज है. आशिकाने रसूल के म-दनी ककिषों में अ निष्यते सवाल सुन्नतों की तरबिष्यत के विषे सकर और रोजाना किके मदीना के जरीअे म-दनी ईन्आमात अ रिखावा पुर कर के हर म-दनी माह के इन्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِنَّمَا نَحْنُ بِمَنْعِكُمْ لَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ** की अ-र-कत से पाअने सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईम्मान की सिक्कजत के विषे दुकने का जेहन अनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाअे के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. **إِنَّمَا نَحْنُ بِمَنْعِكُمْ لَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ**" अपनी ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी ककिषों" में सकर करना है. **إِنَّمَا نَحْنُ بِمَنْعِكُمْ لَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ**



**माह-त-अतुल मदीना**

दा'वते ईस्लामी



डेवाले मदीना, श्री डोनिया जगीये के सामने, मिटाबापूर, अहमदशाहाब, गुजरात, इन्डिया  
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net